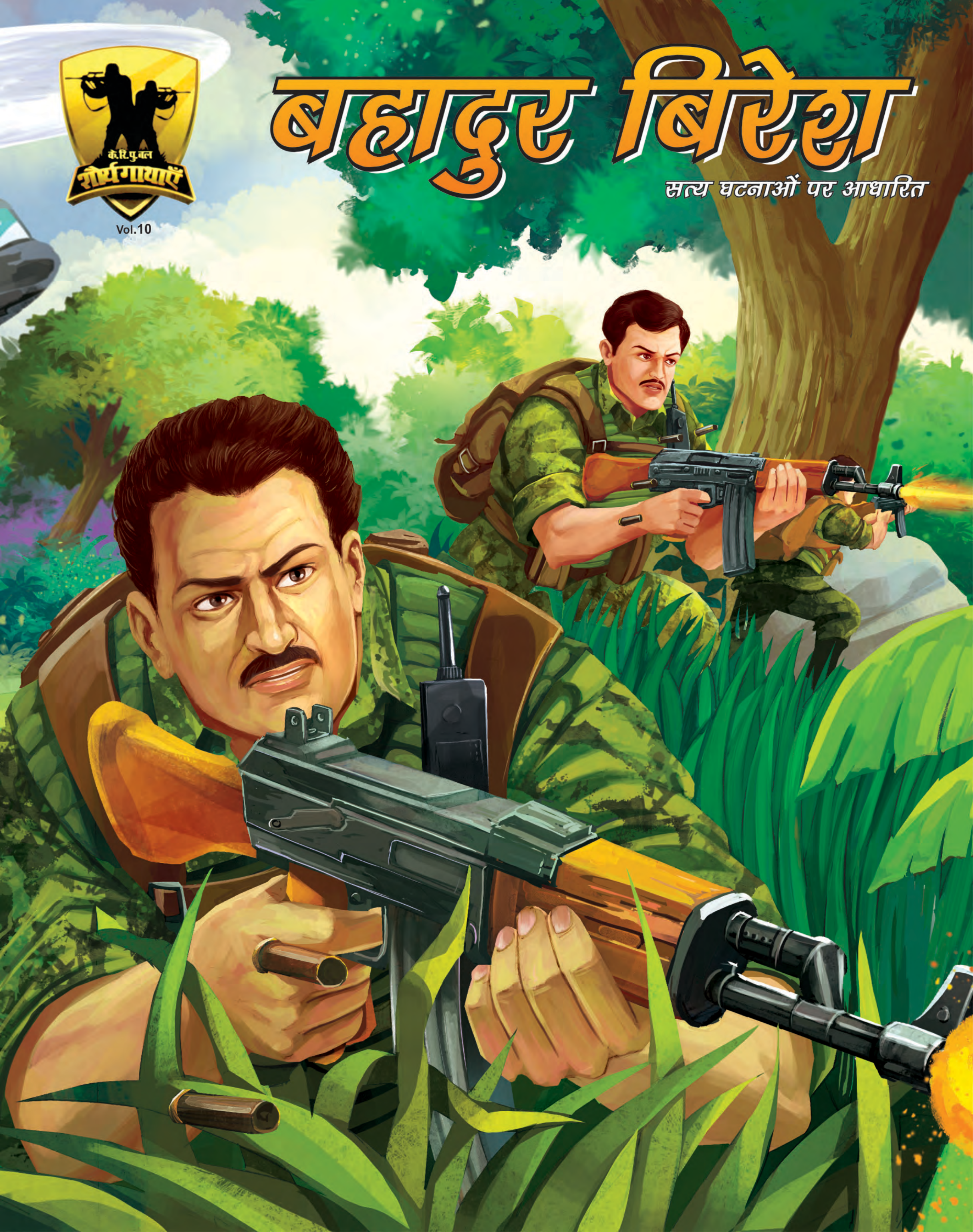
के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ
Vol.10
बहादुर बिरेश
सत्य घटनाओं पर आधारित

अशोक चक्र

अशोक चक्र शांतिकाल में दिया जाने वाला भारत के सैन्य सम्मानों में सर्वोच्च सम्मान है। परमवीर चक्र के तुल्य यह सम्मान सैनिकों अथवा आम नागरिकों को देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए वीरतापूर्ण व साहसिक कार्य या आत्म बलिदान हेतु दिया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है।

वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक

वरीयता क्रम में शौर्य चक्र के बाद आने वाला वीरता के लिए राष्ट्रपति का पुलिस पदक देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले वीर पुलिस कर्मियों को प्रदान किया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक के मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ

बहादुर बिरेश

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

प्रस्तुतिः संजय गुप्ता
लेखनः मंदार गंगेले
चित्रांकनः हेमंत कुमार
स्याहीकारः विनोद कुमार
आवरणः विनोद कुमार, इशान त्रिवेदी
रंग सज्जाः सुनील दस्तुरिया
शब्दांकनः मंदार गंगेले
संपादनः मनीष गुप्ता

Published By: Raj Comics (an imprint of Raja Pocket Books) on behalf of Directorate General C.R.P.F.

Raj Comics
330/1, Burari
Delhi-110084
www.rajcomics.com
Ph. 01127611410

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed By: Prince Print Process

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopy, recording or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher- For permission requests write to the publisher addressed "Attention: Permissions Coordinator" at the address below.

Inspector General (Operations)
Central Reserve Police Force
Email: igops@crpf.gov.in

बसगोइ, तहसील सासनी, हाथरस, उत्तर प्रदेश के छोटे से परिवार में जन्में श्री बिरेश चौहान के अन्दर देश प्रेम और देशभक्ति की भावना काफी छोटी उम्र से ही विकसित हो गई थी! इसका कारण था उनके परिचितों और रिश्तेदारों में से अधिकतर लोग सेना में भर्ती हो कर देश की सेवा करने में जुटे हुए थे!
सेना की वर्दी और उनके रौब से श्री बिरेश खासे प्रभावित थे!
टी.वी. पर बच्चों के कार्यक्रमों की जगह वे देशभक्ति की फिल्में देखना ज्यादा पसंद करते थे!
स्कूल में स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस या अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी श्री बिरेश चौहान सेना के वीर सिपाही का पात्र निभाने के लिए सदैव लालायित रहते थे!
युवावस्था में कदम रखने के बाद श्री बिरेश का सेना के प्रति प्रेम जूनून में तब्दील हो गया। उन्होंने इस जूनून को अपने अंजाम तक पहुंचाने का निश्चय किया...
...और उसमें वे सफल रहे! सन 2008 में श्री बिरेश ने SSC की परीक्षा उत्तीर्ण की और सी.आर.पी.एफ. में सब इन्सपैक्टर के लिए चुने गए!

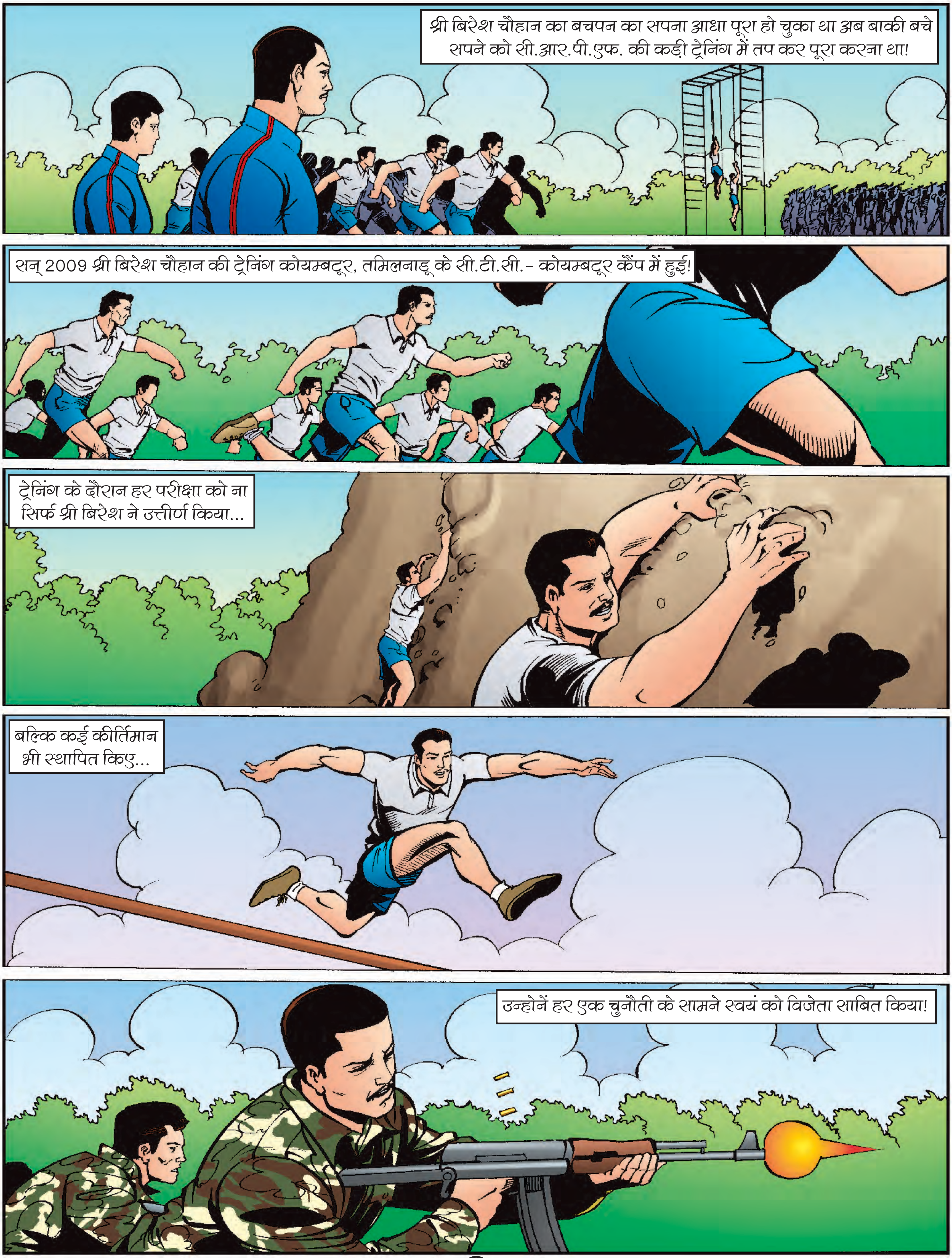
श्री बिरेश चौहान का बचपन का सपना आधा पूरा हो चुका था अब बाकी बचे सपने को सी.आर.पी.एफ. की कड़ी ट्रेनिंग में तप कर पूरा करना था!
सन् 2009 श्री बिरेश चौहान की ट्रेनिंग कोयम्बटूर, तमिलनाडु के सी.टी.सी.- कोयम्बटूर कैंप में हुई!
ट्रेनिंग के दौरान हर परीक्षा को ना सिर्फ श्री बिरेश ने उत्तीर्ण किया...
बल्कि कई कीर्तिमान भी स्थापित किए...
उन्होनें हर एक चुनौती के सामने स्वयं को विजेता साबित किया!

अपने कर्तव्य के प्रति लगन व कठोर परिश्रम के कारण श्री बिरेश चौहान हमेशा प्रथम पायदान पर ही रहे!
लेकिन अपनी इस सफलता को श्री बिरेश ने कभी अपने घमंड का कारण नहीं बनने दिया! अपने श्रेष्ठ को उन्होंने कभी श्रेष्ठतम नहीं माना इसीलिए अपनी हर सफलता के बाद अपने लिए नई चुनौती वे खुद ही खोज लिया करते थे!
ट्रेनिंग कैंप में नए बैच में आए उस नवीनतम ट्रेनी, दौड़ में जिसकी गति का कोई मुकाबला नहीं कर पाता था श्री बिरेश ने मन ही मन उससे आगे निकलने की ठान ली थी!
उन्होंने उस साथी के साथ एक दोस्ताना रेस का आयोजन किया! उस रेस का उद्देश्य श्री बिरेश की खुद की क्षमता को परखना था ना कि अपने साथी को हरा कर उसे कमतर दिखाना!
स्वयं में सदैव श्रेष्ठ को खोजने के कार्य में श्री बिरेश हमेशा खरे उतरते थे किन्तु ऐसा करने के लिए उन पर जोश इस कदर हावी हो जाया करता था कि..
...उन्हें अपने लक्ष्य के अलावा मार्ग में कुछ भी दिखाई नहीं देता था!
...राह में आने वाली बाधाएं भी नहीं!
किंतु बाधाओं और मुश्किलों को भी श्री बिरेश स्वयं के लिए एक नई परीक्षा के रूप में लेते थे!

वे मुश्किलों को सबसे अच्छा शिक्षक मानते थे। क्योंकि अनुकूल परिस्थितियों में तो कोई भी सीख सकता है!
वास्तविक शिक्षा वही है जो प्रतिकूल परिस्थितियों में ग्रहण की गई हो!
अपने साथी के साथ रेस के दौरान हुई उस दुर्घटना ने श्री बिरेश को पंद्रह दिनों तक चलने- फिरने से वंचित कर दिया था!
चोट काफी गंभीर है! पांव का मांस फट गया है!
इसे रिकवर होने में कम से कम पंद्रह दिनों का समय लगेगा, तब तक आपका चलना-फिरना बंद!
किन्तु बिरेश चौहान जी ने परिस्थितियों के आगे झुकना नहीं, परिस्थितियों को झुकाना सिखा था!
सात दिनों के भीतर ही उन्होंने अपनी चोट को हैरान-परेशान करना आरम्भ कर दिया था!
दसवें दिन वे पहले की भांति दौड़ने लगे थे!
और पंद्रहवे दिन से पूर्व ही वे हॉस्पिटल से डिस्चार्ज हो कर अपने नियमित अभ्यास पर लौट आए थे।

कठिन परिश्रम और सतत अभ्यास के बाद अंततः वह दिन आ गया जब श्री बिरेश चौहान को सी.आर.पी.एफ. में आधिकारिक रूप से शामिल कर लिया गया!
सी.आर.पी.एफ. में भर्ती होने के बाद सन् 2010 में श्री बिरेश चौहान की तैनाती 217वीं बटालियन में कोन्टा, सुकमा छत्तीसगढ़ में हुई!
तैनाती के बाद श्री बिरेश को अपने पहले ऑपरेशन पर जाने का मौका काफी लम्बे समय के बाद मिला!
किन्तु जैसे ही उन्हें ऑपरेशन पर जाने का मौका मिला उन्होंने उस मौके का भरपूर फायदा उठाया!
उसके बाद से श्री बिरेश ने कई सफल सर्च एंड डिस्ट्रॉय ऑपरेशनों को अंजाम दिया!

जब भी उन्हें अपनी ड्यूटी से अवकाश मिलता घर आ कर उन सफल ऑपरेशनों का अनुभव वे अपने परिवार और मित्रों के साथ साझा करते!
उन खतरनाक ऑपरेशनों की दास्तां सुन श्री बिरेश के मित्रों व परिवार का हृदय गर्व से भर उठता था!
श्री बिरेश अब तक जितने भी ऑपरेशनों का हिस्सा रहे उन सभी में अपनी तरह की चुनौतियां और जटिलताएं थी...
अप्रैल 2013 में जब वे अपनी छुट्टी खत्म कर सी.आर.पी.एफ. कैंप लौटे ही थे कि उन्हें एक आपातकालीन मिशन पर जाने के लिए तैयार होने के लिए कहा गया!
लेकिन आगे जिस मिशन का वे हिस्सा बनने जा रहे थे उसकी जटिलता की कल्पना उन्होंने सपने में भी नहीं की थी!
श्री बिरेश बिना समय गंवाए ब्रीफिंग रूम में पहुंचे जहां श्री के. प्रसाद बाबू (आंध्र प्रदेश पुलिस) मिशन के बारे में जवानों को ब्रीफ कर रहे थे किन्तु ब्रीफिंग आधी निकल चुकी थी!
लेकिन श्री बिरेश के लिए इतना ही जानना काफी था कि छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले के जगरगुण्डा, दूलर व पूवर्ती गांव के आसपास के क्षेत्र में नक्सलियों का एक जत्था पुनः सक्रीय हो गया है जिसे उन्हें नेस्तनाबूत करना है!
पांच से छः दिन लम्बे चलने वाले मिशन की योजना को सुनने के लगभग तुरंत बाद सी.आर.पी.एफ. के सभी जवान मिशन पर जाने के लिए स्वयं को और अपने हथियारों को तैयार करने में जुट गए!

14 अप्रैल 2013, समय 6:00 PM
ऑपरेशन के आगाज के लिए शाम का समय चुना गया! चयनित सभी 5 सैनिक टुकड़ियां शाम 4:30 बजे बेस कैंप पर उपस्थित हो चुकीं थीं। !
अबसे कुछ ही देर में हम सभी यहां से ड्रॉपिंग पॉईंट के लिए रवाना होंगे, साथियों। लेकिन इस कॉम्बैट ड्रैस में नहीं!
वहां तक हमें आम नागरिकों की पौशाक में ही जाना होगा।

योजना के तहत सभी टुकड़ियों को एक ड्रॉपिंग पॉइंट तक पहुंचाया जाना था जहां से गंतव्य तक जाने वाला जंगली रास्ता सभी जवानों को पैदल ही तय करना था!
दुश्मन को सी.आर.पी.एफ. के इस कदम की जरा भी भनक ना लग सके इसीलिए सेना के वाहनों की जगह आम मालवाहक वाहनों का प्रयोग में लाना तथा आम नागरिकों की वेशभूषा में जाना योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था!
दुश्मन के सामने खुल कर आना मिशन को शुरू होने से पहले ही समाप्त कर सकता था!
सभी 5 टुकड़ियां आम ट्रांसपोर्ट के ट्रकों में साधारण नागरिकों की तरह अपने लक्ष्य की ओर निकल चलीं!
लगभग चालीस किलोमीटर का फासला तय करने के बाद सभी टुकड़ियां ड्रॉपिंग पॉइंट तक पहुंच गईं!
और वहां पहुंचते ही उस मिशन की मुश्किलें और कठिनाइयां उनके सामने आना शुरू हो गईं!
अरे! इतने घने जंगल में यह रौशनी कहां से आ रही है?
के. प्रसाद बाबू को अपने सवाल का जवाब तुरंत ही मिला!
वह देखिए सर! कोई इसी ओर आ रहा है! लेकिन इस घने जंगल में इस समय कोई क्या कर सकता है?
यह नक्सलियों का एजेंट हो सकता है। सभी छिप जाओ! हमें इसके सामने नहीं आना है!
सभी जवान बिना कोई क्षण गंवाए छिप गए! जो ट्रक में था वह ट्रक में रह गया जो उतर चुका था वह जंगल में जा कर छिप गया!

प्रसाद बाबु और श्री बिरेश की चिंता जायज थी साइकल सवार टॉर्च की लाईट ट्रकों पर मार कर कुछ जांचने की कोशिश कर रहा था!
किन्तु के. प्रसाद बाबू और सी.आर.पी.एफ. के जवानों के त्वरित एक्शन ने उसे ऐसा कुछ भी जानने का मौका नहीं दिया जो मिशन की सफलता में बाधक बन पाता!
उस साइकल सवार के वहां से जाने के लगभग पंद्रह मिनट पश्चात खतरे के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हो कर सी.आर.पी.एफ. के सभी सिपाहियों ने ट्रक छोड़ दिया!
कुछ ही क्षणों बाद सभी अपनी-अपनी कॉम्बैट ड्रेस पहनकर अपना-अपना सामान ले कर अपनी यात्रा आरम्भ करने के लिए तैयार थे!
क्या सभी इस मिशन पर आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं? यदि किसी के मन में अभी भी कोई शंका या भय हो तो वह ट्रकों के साथ वापस जा सकता है!
यहां से अब हम दुश्मनों को नेस्तनाबूत करके ही वापस लौटेंगे, सर!
रात के लगभग 11 बजे टुकड़ियों ने अलग-अलग दिशाओं में अपनी यात्रा आरम्भ की!

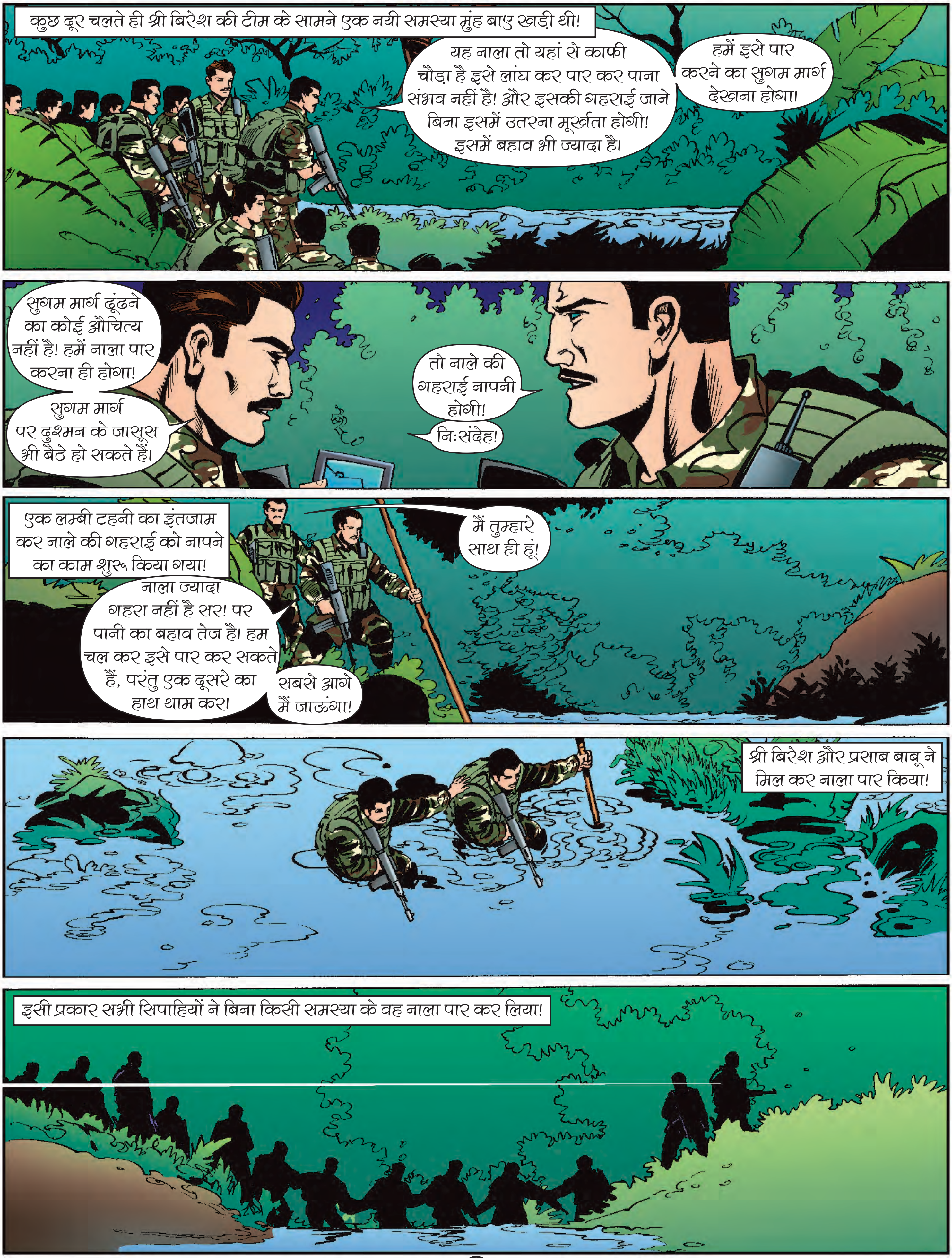

कुछ दूर चलते ही श्री बिरेश की टीम के सामने एक नयी समस्या मुंह बाए खड़ी थी!
यह नाला तो यहां से काफी चौड़ा है इसे लांघ कर पार कर पाना संभव नहीं है! और इसकी गहराई जाने बिना इसमें उतरना मूर्खता होगी! इसमें बहाव भी ज्यादा है।
हमें इसे पार करने का सुगम मार्ग देखना होगा।
सुगम मार्ग ढूंढने का कोई औचित्य नहीं है! हमें नाला पार करना ही होगा!
सुगम मार्ग पर दुश्मन के जासूस भी बैठे हो सकते हैं।
तो नाले की गहराई नापनी होगी!
निःसंदेह!
एक लम्बी टहनी का इंतजाम कर नाले की गहराई को नापने का काम शुरू किया गया!
मैं तुम्हारे साथ ही हूं!
नाला ज्यादा गहरा नहीं है सर! पर पानी का बहाव तेज है। हम चल कर इसे पार कर सकते हैं, परंतु एक दूसरे का हाथ थाम कर।
सबसे आगे मैं जाऊंगा!
श्री बिरेश और प्रसाब बाबू ने मिल कर नाला पार किया!
इसी प्रकार सभी सिपाहियों ने बिना किसी समस्या के वह नाला पार कर लिया!

एक बाधा श्री बिरेश और उनकी टीम ने पार कर ली थी लेकिन यह मिशन की केवल शुरुआत मात्र थी! बाधाएं अभी और भी थीं!
किर्र!
यह आवाज कैसी?
यह किसी कीड़े या फिर जानवर की आवाज नहीं लगती!
किसी झुनझुने की आवाज लग रही है सर!
श्री बिरेश का अंदाजा इस बार भी सही था!
सर! वह देखिए, वहां रौशनी दिखाई दे रही है और वह रौशनी हमारी ओर बढ़ती हुई जान पड़ रही है!
लगता है कोई इसी ओर आ रहा है!
दो व्यक्ति क्रमशः हाथ में लालटेन लिए व झुनझुना बजाते हुए आगे बढ़े जा रहे थे! वेशभूषा से दोनों साधू सन्यासी से प्रतीत हो रहे थे! किन्तु यह दुश्मन की कोई चाल भी हो सकती थी...
इसीलिए खतरा भांपते ही सभी जवान तुरंत हरकत में आए और इस तरह से झाड़ियों और घासफूस में छिप गए जैसे वे उन्हीं का हिस्सा हों!
यह सी.आर.पी.एफ. की ट्रेनिंग का ही कमाल था कि वहां मौजूद होते हुए भी जवान उन दोनों की नजरों में नहीं आए!
जल्द ही वे दोनों व्यक्ति अपने रास्ते चल दिए!

शीघ्र ही सी.आर.पी.एफ. टीम ने अपनी यात्रा पुनः आरम्भ की!
जंगल का अनजाना रास्ता और रात्रि का घुप्प अन्धकार समय-समय पर सी.आर.पी.एफ. के जवानों के सामने बाधाएं खड़ी कर रहा था!
जिन्हें आपसी सहयोग और सूझबूझ के साथ सिपाही बखूबी पार कर रहे थे! श्री बिरेश उन्हें सही राह दिखाने के लिए सबसे आगे थे!
कई किलोमीटर चलने के बाद टीम कमांडर श्री के. प्रसाद बाबू ने कुछ देर विश्राम करने का फैसला लिया!
टीम! यह जगह एल.यु.पी. लेने के लिए उपयुक्त हैं! सभी रुक कर विश्राम कर अपनी थकान मिटा लें! विश्राम के बाद हम अपना मिशन रिज्यूम करेंगे!
इसी के साथ श्री के. प्रसाद बाबू ने वायरलेस पर अन्य टीमों की स्थिति पता कर उन्हें अपनी स्थिति से अवगत करवाया!

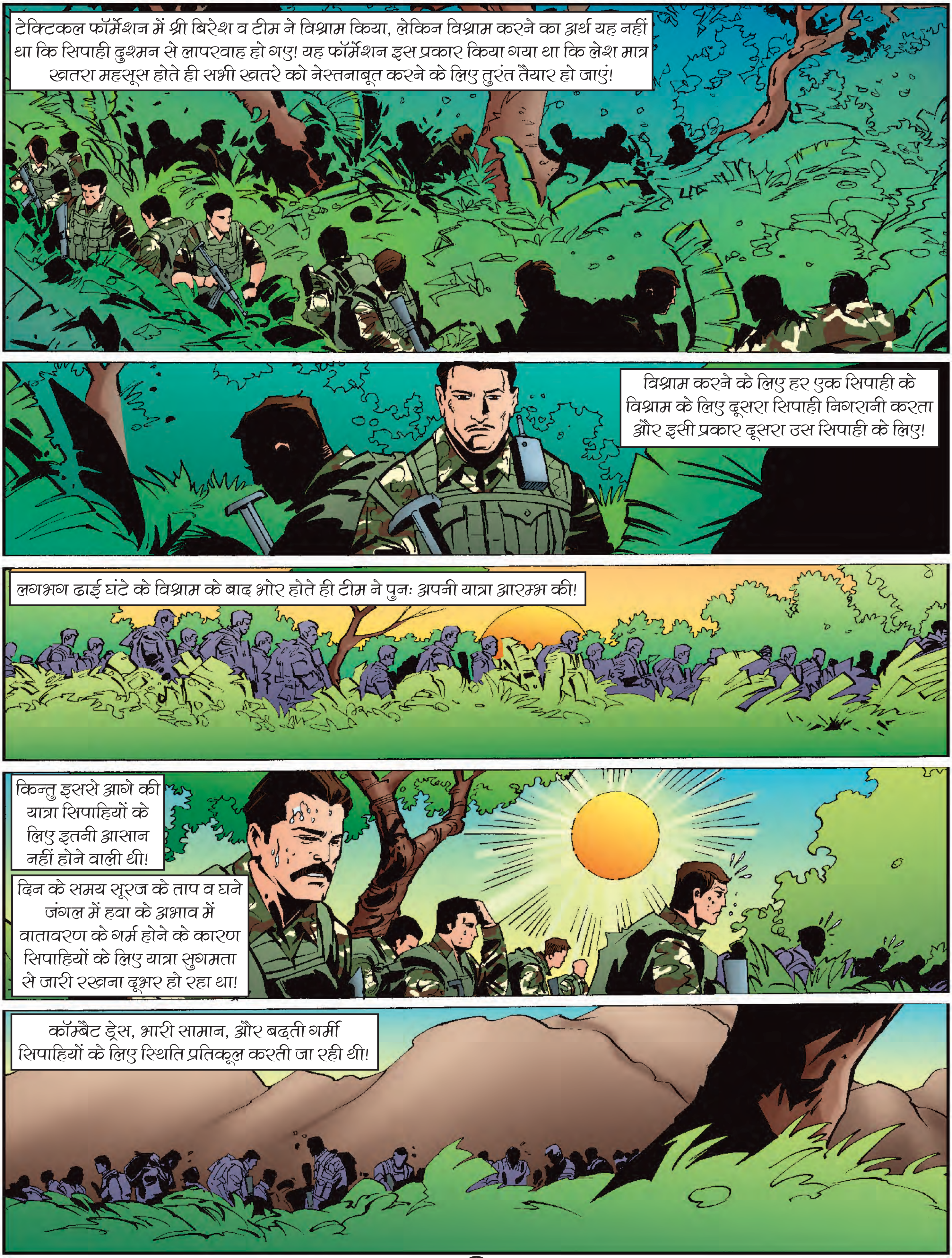
टेक्टिकल फॉर्मेशन में श्री बिरेश व टीम ने विश्राम किया, लेकिन विश्राम करने का अर्थ यह नहीं था कि सिपाही दुश्मन से लापरवाह हो गए! यह फॉर्मेशन इस प्रकार किया गया था कि लेश मात्र खतरा महसूस होते ही सभी खतरे को नेस्तनाबूत करने के लिए तुरंत तैयार हो जाएं!
विश्राम करने के लिए हर एक सिपाही के विश्राम के लिए दूसरा सिपाही निगरानी करता और इसी प्रकार दूसरा उस सिपाही के लिए!
लगभग ढाई घंटे के विश्राम के बाद भोर होते ही टीम ने पुनः अपनी यात्रा आरम्भ की!
किन्तु इससे आगे की यात्रा सिपाहियों के लिए इतनी आसान नहीं होने वाली थी!
दिन के समय सूरज के ताप व घने जंगल में हवा के अभाव में वातावरण के गर्म होने के कारण सिपाहियों के लिए यात्रा सुगमता से जारी रखना दूभर हो रहा था!
कॉम्बैट ड्रेस, भारी सामान, और बढ़ती गर्मी सिपाहियों के लिए स्थिति प्रतिकूल करती जा रही थी!

परिस्थितियो के इतनी विकट हो जाने की कल्पना किसी ने भी नहीं की थी! भार कम रखने के लिहाज से पानी व भोजन पहले ही सीमित मात्रा में लिया गया था!
अब गर्मी के बढ़ जाने के कारण पानी की मात्रा तेजी से खत्म होती जा रही थी!
लेकिन इस परिस्थिति में भी सिपाही एक दूसरे को अपने हिस्से का पानी दे कर उनकी सहायता कर रहे थे!
बियाबान जंगल में पानी का स्त्रोत मिल पाना भूसे के ढेर में सुई के मिलने के सामान था! किन्तु किस्मत को भी सिपाहियों के जज्बे और कठोर श्रम पर तरस आ रहा था तभी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए सिपाहियों को पानी का एक स्त्रोत दिखाई दिया!
वह देखो उधर एक कुआं दिखाई दे रहा है! शायद हमें वहां पानी मिल जाए!
लेकिन किस्मत सिपाहियों पर इतनी भी मेहरबान नहीं थी, अभी सिपाहियों की और परख बाकी थी! उस छोटी सी कुइयां में पानी तो था लेकिन उससे पूरी टीम की पानी की आपूर्ति हो पाती यह असंभव था!
साथ ही पानी कीड़ों से भरा पड़ा था!
किन्तु उस परिस्थिति में सिपाहियों के पास पानी का होना महत्वपूर्ण था! अन्यथा दुश्मन तक पहुंचने से पहले वह विकट परिस्थिति ही सिपाहियों को परास्त कर देती!
श्री बिरेश ने उस स्त्रोत से पानी निकाल कर अपने साथियों को दिया, जिसे उन्होंने एक महीन कपड़े से छान कर अपने जल पात्रों में भरा!

पानी की समस्या के अतिरिक्त श्री बिरेश के पांव में लगी चोट भी भयावह रूप धारण कर रही थी और उनका पांव सूजने लगा था! लगातार चलते रहने की वजह से सूजन और पीड़ा बढती जा रही थी!
किन्तु श्री बिरेश ने अपनी इस पीड़ा को किसी पर जाहिर नहीं होने दिया...
...इसके उलट वे अपने साथी सिपाहियों के हौंसलों को समय-समय पर बढ़ाने का कार्य बखूबी कर रहे थे!
शाबाश जावान, बढ़ते रहो! रुकना नहीं है।
अपने वरिष्ठ अधिकारी का जोश व जज्बा देख अन्य साथी सिपाही भी मिशन को पूरा करने के लिए अपना सर्वस्व झोंकने के लिए तैयार थे!
वे सभी इस बात से अनजान थे कि उनमें जोश का संचार करने वाले श्री बिरेश चौहान की स्थिति एक कदम भी आगे बढ़ने लायक नहीं थी किन्तु फिर भी वे अपने साथियों के कदम से कदम मिला कर चल रहे थे!
परिस्थितियों वश श्री बिरेश ने अंततः अपने दर्द को दबाने के लिए दवाइयों का सहारा लेने का निर्णय लिया!
उन दवाइयों ने श्री बिरेश की पीड़ा तो लोप कर दी, किन्तु साथ ही उनके ऊपर निद्रा को भी बुरी तरह हावी कर दिया था!
किन्तु फिर भी वे अपनी निद्रा से लड़ते हुए आगे बढ़े जा रहे थे!

गर्मी अभी भी सैनिकों के हौसले पस्त करने की पुरजोर कोशिश कर रही थी!
कुछ किलोमीटर का फासला तय करने के बाद सभी ने रात्री भोजन कर आराम करने का निर्णय लिया जो कि मिशन की सफलता के लिए बहुत जरूरी था।
रात्री के भोजन के पश्चात टीम ने रात्री आठ बजे से सुबह 4 बजे तक का विश्राम किया!
लम्बे और आवश्यक आराम ने सभी सिपाहियों को तर-ओ-ताजा कर उनके अन्दर नया उत्साह, नया जोश भर दिया और वे पुनः अपने लक्ष्य की ओर बढ़ चले!
सभी खुद को स्फूर्तिवान महसूस कर रहे थे, ऐसे में यदि दुश्मन उनके सामने पड़ जाता तो उनका बच पाना असंभव था!

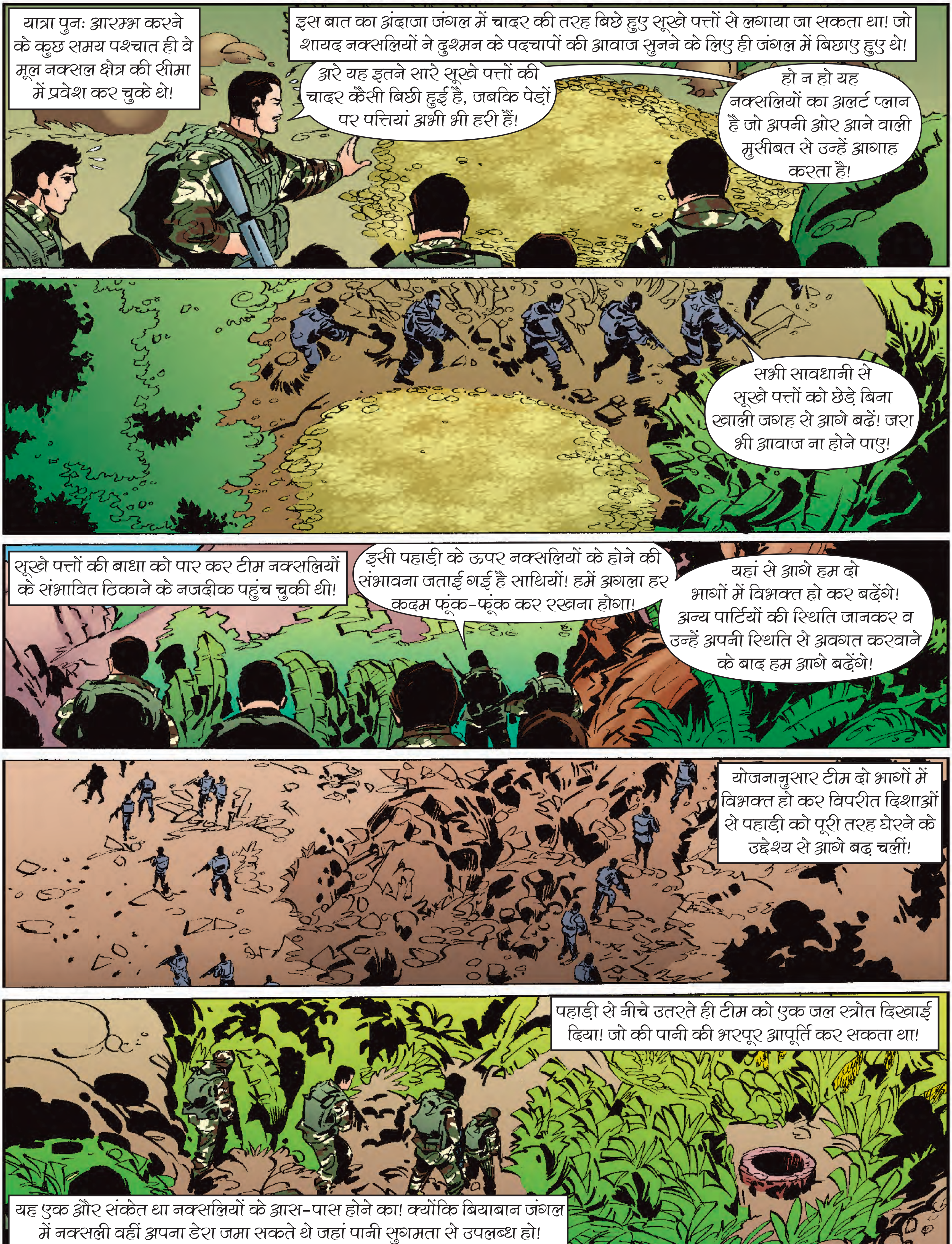

यात्रा पुनः आरम्भ करने के कुछ समय पश्चात ही वे मूल नक्सल क्षेत्र की सीमा में प्रवेश कर चुके थे!
इस बात का अंदाजा जंगल में चादर की तरह बिछे हुए सूखे पत्तों से लगाया जा सकता था! जो शायद नक्सलियों ने दुश्मन के पदचापों की आवाज सुनने के लिए ही जंगल में बिछाए हुए थे!
अरे यह इतने सारे सूखे पत्तों की चादर कैसी बिछी हुई है, जबकि पेड़ों पर पत्तियां अभी भी हरी हैं!
हो न हो यह नक्सलियों का अलर्ट प्लान है जो अपनी ओर आने वाली मुसीबत से उन्हें आगाह करता है!
सभी सावधानी से सूखे पत्तों को छेड़े बिना खाली जगह से आगे बढ़ें! जरा भी आवाज ना होने पाए!
सूखे पत्तों की बाधा को पार कर टीम नक्सलियों के संभावित ठिकाने के नजदीक पहुंच चुकी थी!
इसी पहाड़ी के ऊपर नक्सलियों के होने की संभावना जताई गई है साथियों! हमें अगला हर कदम फूंक-फूंक कर रखना होगा!
यहां से आगे हम दो भागों में विभक्त हो कर बढ़ेंगे! अन्य पार्टियों की स्थिति जानकर व उन्हें अपनी स्थिति से अवगत करवाने के बाद हम आगे बढ़ेंगे!
योजनानुसार टीम दो भागों में विभक्त हो कर विपरीत दिशाओं से पहाड़ी को पूरी तरह घेरने के उद्देश्य से आगे बढ़ चलीं!
पहाड़ी से नीचे उतरते ही टीम को एक जल स्त्रोत दिखाई दिया! जो की पानी की भरपूर आपूर्ति कर सकता था!
यह एक और संकेत था नक्सलियों के आस-पास होने का! क्योंकि बियाबान जंगल में नक्सली वहीं अपना डेरा जमा सकते थे जहां पानी सुगमता से उपलब्ध हो!

जेकपॉट हाथ लगा है साथियों! कुआं पानी से लबालब भरा हुआ है! जी भर के पियो!
बस समस्या एक ही है पानी पीने के लिए तुम्हें इस कुएं में मौजूद सर्पों से आज्ञा लेनी होगी!
पानी की उपलब्धता सिपाहियों के लिए हर मुसीबत हर खतरे से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण थी!
उन्हें हर हाल में पानी को प्राप्त करना था!
और सी.आर.पी.एफ. के सिपाही एक बार जिस चीज को करने का ठान लेते हैं उसे पूरा किए बिना दम नहीं लेते!
सिपाहियों के इस जज्बे के आगे हर खतरे को सिर झुकाना ही पड़ता है!
सभी पानी पी कर हटे ही थे कि श्री बिरेश का ध्यान पास ही लगे जंगल की ओर हो रही हलचल की ओर गया!
अरे! उधर क्या है? वे दो लड़के जंगल की ओर भागे जा रहे हैं? कहीं उन्होंने हमें यहां देख तो नहीं लिया?
सभी तुरंत हरकत में आए और जमीन पर लेटकर लड़कों की स्थिति पर नजर रखने लगे!
हमारे पानी लेते समय ये लोग यहां नहीं थे फिर अचानक से ये कहां से आ गए? हमें देख कर ही तो कहीं यह वापस नहीं जा रहे!
अगर ऐसा है तो यह हमारे लिए खतरे का विषय है! हमें उनके पीछे जाना चाहिए!

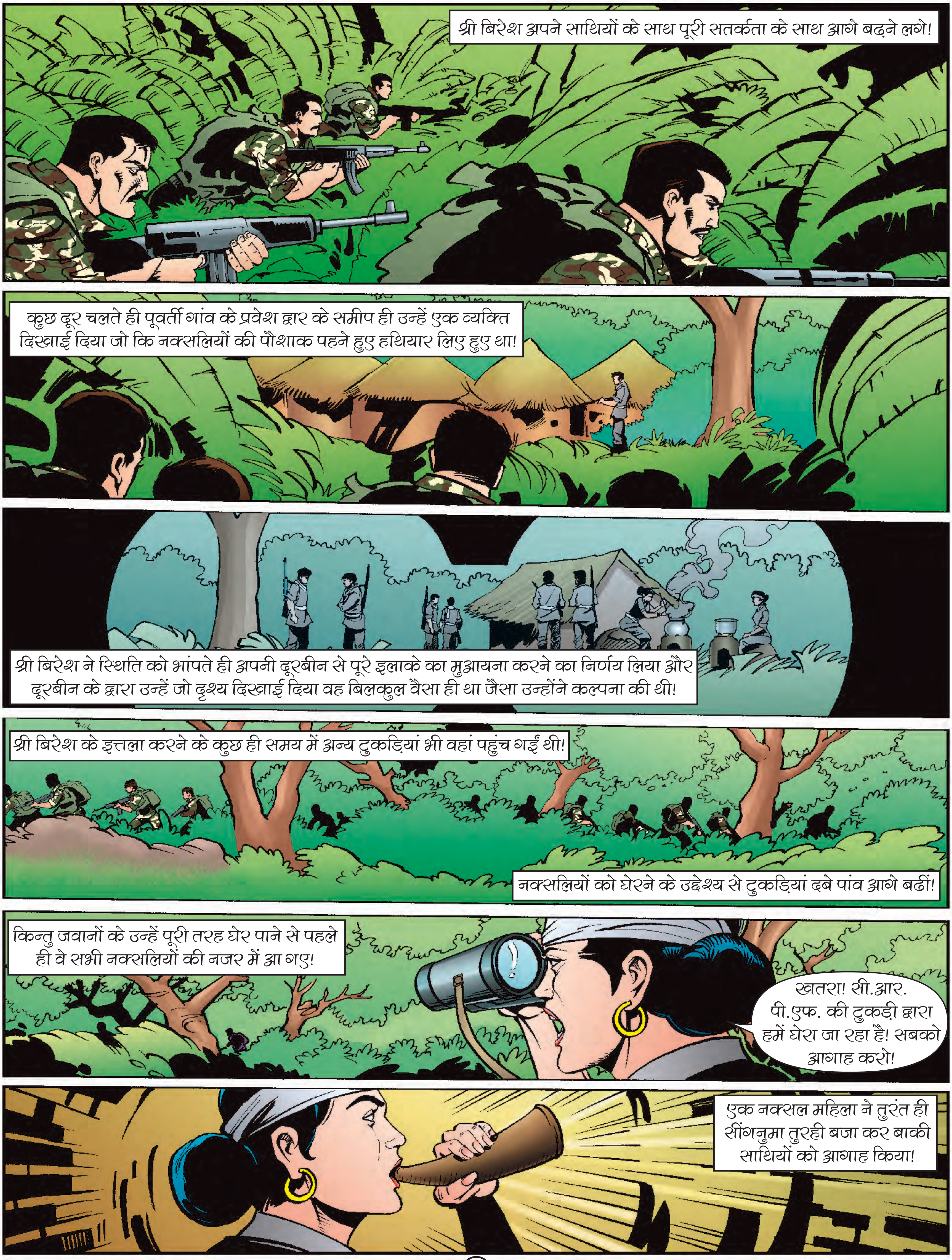

श्री बिरेश अपने साथियों के साथ पूरी सतर्कता के साथ आगे बढ़ने लगे!
कुछ दूर चलते ही पूवर्ती गांव के प्रवेश द्वार के समीप ही उन्हें एक व्यक्ति दिखाई दिया जो कि नक्सलियों की पौशाक पहने हुए हथियार लिए हुए था!
श्री बिरेश ने स्थिति को भांपते ही अपनी दूरबीन से पूरे इलाके का मुआयना करने का निर्णय लिया और दूरबीन के द्वारा उन्हें जो दृश्य दिखाई दिया वह बिलकुल वैसा ही था जैसा उन्होंने कल्पना की थी!
श्री बिरेश के इत्तला करने के कुछ ही समय में अन्य टुकड़ियां भी वहां पहुंच गईं थी!
नक्सलियों को घेरने के उद्देश्य से टुकड़ियां दबे पांव आगे बढ़ीं!
किन्तु जवानों के उन्हें पूरी तरह घेर पाने से पहले ही वे सभी नक्सलियों की नजर में आ गए!
खतरा! सी.आर. पी.एफ. की टुकड़ी द्वारा हमें घेरा जा रहा है! सबको आगाह करो!
एक नक्सल महिला ने तुरंत ही सींगनुमा तुरही बजा कर बाकी साथियों को आगाह किया!

के. प्रसाद बाबू ने तुरही की आवाज सुनते ही दूरबीन से स्थिति का जायजा लिया! उन्हें तुरंत ही समझ आ गया कि...
उन्हें हमारे यहां होने का पता लग चुका है और उन्होंने अपने साथियों को भी आगाह कर दिया है! हम दुश्मन की नजरों में आ चुके हैं! अब यह छुपन छुपाई का खेल बंद करना होगा!
अचानक से सी.आर.पी.एफ. टीम के ऊपर हमला हुआ!
के. प्रसाद बाबू ने तुरंत जवानों को हमला करने के आदेश दिए!
चार्ज!
नक्सली भी हमला करने के लिए खुद को तैयार कर चुके थे!
आओ हरामखोरों! यहां आ कर गलती कर दी! घर बैठे रहते तो शायद कुछ दिन और जी लेते लेकिन अब तुम सभी की अर्थियां समय से पहले ही उठ जाएंगी!
नक्सलियों को कमतर आंकने की भूल जवान नहीं कर सकते थे क्योंकि जरा सी चूक देश का एक बहादुर सिपाही देश से कम कर देता! और ऐसा होने का खतरा वे लोग मोल नहीं ले सकते थे!
टीम बड़ी ही सूझ बूझ और समझदारी के साथ मिशन को अंजाम देना जानती थी!

और पीछे नक्सली भी हटना नहीं चाहते थे! नक्सल महिला लगातार फायर करते हुए अपने साथियों को एकजुट होने का मौका दे रही थी!
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
यह बात श्री बिरेश को समझ आ गई थी!
इस महिला नक्सल को धराशायी करना होगा अन्यथा इसके हमले से मिले समय का लाभ उठा कर बाकी नक्सली भी हम पर हावी होने कि कोशिश कर सकते हैं!
श्री मुरुगन ने श्री बिरेश को सुझाव दिया।
सर! आप फायर करते हुए आगे बढ़िए मैं आपको कवर करता हूं!
भारत माता की जय!
श्री बिरेश नक्सलियों पर ताबड़तोड़ फायर करते हुए आगे बढ़े! पीछे से श्री मुरुगन, श्री बिरेश को कवर करने के लिए फायर कर रहे थे! टीम वर्क का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे मुरुगन और बिरेश!
टीम वर्क नक्सलियों का भी कम नहीं था! सभी नक्सली अपनी साथिन का साथ देने के लिए वहां पहुंच चुके थे!
लेकिन श्री बिरेश को उस टीम को तोड़ना बखूबी आता था! श्री बिरेश द्वारा दागे गए ग्रेनेड्स ने नक्सलियों के दल में खलबली मचा दी!

धमाके का जवाब नक्सलियों ने भी धमाके से ही दिया!
एक के बाद एक आई.ई.डी. के कई धमाके श्री बिरेश की टीम के आगे किए गए लेकिन वे धमाके श्री बिरेश और उनकी टीम की हिम्मत तोड़ने का काम ना कर सके!
शीघ्र ही श्री बिरेश व उनके साथी नक्सलियों की सीमा में पहुंच कर उन्हें प्रथम घाव दे चुके थे! पहला खून नक्सलियों की ओर से बहा!
अपनी साथी की जान जाते देख अन्य महिला नक्सलियों ने सी.आर.पी.एफ. टीम पर अंधाधुंध फायर करना शुरू कर दिया! लेकिन अपनी साथी की मृत्यु के शोक में उनके फायर अपने लक्ष्य पर नहीं लग रहे थे!
नक्सलियों की इसी चूक का फायदा श्री बिरेश ने उठाया! ताबड़तोड़ फायरिंग करते हुए उन्होंने नक्सलियों को दो घाव और दे दिए!
घावों का आंकडा श्री मुरुगन ने बढ़ा कर पांच कर दिया! कुल पांच नक्सली अब तक धराशायी हो चुके थे!

श्री बिरेश और श्री मुरुगन ने अपने साथियों के साथ मिल कर नक्सलियों के खेमे में जो हडकंप मचाया था उससे उबर पाने का मौका नक्सलियों को दुबारा नहीं मिल पाया!
फिर भी नक्सलियों ने सी.आर.पी.एफ. की टुकड़ियों को घाव देने की कोशिशें जारी रखीं!
लेकिन वे सभी कोशिशें उन नक्सलियों के लिए मौत ही साबित होने वाली थीं! के. प्रसाद बाबू ने हताहतों की संख्या में इजाफा कर सात कर दिया!
अन्य जवानों की गोलियां भी अपने निशानों को बेध रही थीं!
मोर्चा हाथ से जाता देख बाकी नक्सलियों ने पीछे हटने की नीति को अपनाना बेहतर समझा! अपने साथियों के शवों को छोड़ कर पलायन करने के अतिरिक्त उनके पास कोई और चारा भी नहीं था!
लगभग तीस मिनट तक चली उस मुठभेड़ के बाद सी.आर.पी.एफ. ने उस एरिया को सिक्योर कर लिया! कुल नौ नक्सली मारे जा चुके थे, वह ऑपरेशन सफल हो चुका था!

मारे गए नक्सलियों के शव और सभी जवानों को वहां से ले जाने के लिए हेलिकॉप्टर की व्यवस्था की गई!

क्योंकि अपने साथियों के शवों को हासिल करने के लिए नक्सली बाहरी मदद के साथ दुबारा टीम पर हमला कर सकते थे इसीलिए सर्वप्रथम नक्सलियों के शवों को वहां से भद्राचलम ले जाया गया!

उसके बाद दस-दस के ग्रुप में जवानों को भी हेलिकॉप्टर द्वारा भद्राचलम पहुंचाया गया!

सबसे आखिर में दो टुकड़ियों के जवानों को भद्राचलम पहुंचाना बाकी था जिनमें श्री के. प्रसाद बाबू और श्री बिरेश चौहान शेष रह गए थे! चूंकि श्री बिरेश का स्वास्थ्य उन्हें लगी चोटों के कारण खराब था तो श्री के. प्रसाद बाबू ने श्री बिरेश चौहान को वहां से पहले रवाना होने के आदेश दिए!
सबसे अंत में जब श्री के. प्रसाद बाबू की बारी आई और वे हेलिकॉप्टर में सवार होने ही वाले थे कि भागे हुए नक्सलियों ने लौटकर अपने साथियों के साथ हेलिकॉप्टर पर हमला कर दिया!
प्रसाद बाबू के पास हेलिकॉप्टर तक पहुंचने का समय नहीं था! अपने साथी जवानों की जान को खतरे में ना डालते हुए उन्होंने हेलिकॉप्टर को वहां से रवाना होने लिए कहा!
सर अन्दर आ जाइए सर जल्दी कीजिए!
लेकिन सर!
मैं नहीं पहुंच पाऊंगा वे लोग तुम्हें भी मार देंगे, तुम लोग यहां से निकलो फौरन! पायलट से उड़ान भरने को कहो! मैं इन लोगों को संभालता हूं!
जाओ!

श्री के प्रसाद बाबू ने अकेले ही उन नक्सलियों से लोहा लेने की ठान ली थी! और नक्सलियों के हाथों एक आसान शिकार लग गया था जिसे वे किसी भी हाल में बच कर जाने नहीं देना चाहते थे!
श्री के. प्रसाद बाबू ने अद्वितीय वीरता के साथ काफी देर तक नक्सलियों का सामना किया!
किन्तु अंततः वे नक्सलियों की गोली का शिकार बन वीरगति को प्राप्त हुए! अपने साथी जवानों को बचाने के लिए श्री के. प्रसाद बाबू ने खुद का बलिदान दे दिया!
इस वीरतापूर्ण बलिदान के लिए श्री के. प्रसाद बाबू को मरणोपरांत अशोक चक्र से अलंकृत किया गया।
श्री के. प्रसाद बाबू जैसे वीर सिपाही को हमारा शत-शत नमन है!

समाप्त

अलंकरण

छत्तीसगढ़ के बीजापुर व सुकमा जिले के पूवर्ती ग्राम में नकसलियों के दल के विरुद्ध सर्च एण्ड डिस्ट्रॉय ऑपरेशन के दौरान सी.आर.पी.एफ. के जवानों द्वारा अतुल्य साहस और वीरता के प्रदर्शन हेतु निम्न जवानों को राष्ट्रपति के पुलिस पदक से अलंकृत किया गया!

राष्ट्रपति के पुलिस पदक से सम्मानित

श्री बिरेश चौहान
उप निरीक्षक

श्री पी. वेलूमुरुगन
कॉन्स्टेबल

गृह राज्य मंत्री श्री हंसराम गंगाराम अहीर, श्री बिरेश चौहान, निरीक्षक को राष्ट्रपति के पुलिस पदक से अलंकृत करते हुए।

गृह राज्य मंत्री श्री हंसराम गंगाराम अहीर, श्री पी.वेलूमुरुगन , कॉन्स्टेबल को राष्ट्रपति के पुलिस पदक से अलंकृत करते हुए।

सरदार पोस्ट एक शौर्य गाथा।

9 अप्रैल को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।

वीर भृगुनंदन

यह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गंवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उस स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथियों की भी मदद की।

शूरवीर प्रकाश

एक शौर्य चक्र और छः पुलिस वीरता पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिए कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियां दाहिने कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरूद्ध एक बड़े अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

जाँबाज इलंगो

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े तमिलनाडू के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आए श्री एस. इलंगो की शौर्य गाथा जिन्हें तीन वीरता पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने साहस व सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरूद्ध कई बड़े अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।

अयोध्या के शूरवीर

5 जुलाई, 2005 स्वचालित रायफल्स, हथगोलों और रॉकेट लॉंचर्स से लैस आतंकवादियों को अयोध्या स्थित विवादित स्थल को ध्वस्त करने से रोकना किसी भी सुरक्षा बल के लिए एक दुष्कर कार्य हो सकता था, लेकिन उन आतंकवादियों और विवादित स्थल में मौजूद दर्शनार्थियों के बीच एक अभेद्य सुरक्षा दीवार बन कर खड़े हो गए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) की 33वीं बटालियन के 'डी' कंपनी के जवान, जिन्होंने ना केवल उन सभी आतंकवादियों को मार गिराया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विवादित स्थल और दर्शनार्थियों को लेश मात्र भी क्षति न पहुंचे!

दिलेर दिव्यांशु

नक्सलियों के बीच भय के प्रतीक श्री दिव्यांशु की शौर्य गाथा। जिन्होंने अपने बाल्यकाल में ही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का हिस्सा बनने का निर्णय ले लिया था। उप कमाण्डेंट श्री दिव्यांशु अपने अडिग इरादों और दृढ़ निश्चय के बल पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती हो कर कोबरा कमांडो के रूप में कई दुष्कर ऑपरेशनों को निर्भयता से अपने सफल अंजाम तक पहुंचा कर दो बार पुलिस पदक से सम्मानित हुए।

हॉट स्प्रिंग्स

21 अक्टूबर,1959 लद्दाख के हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने साहस और पराक्रम द्वारा चीन की सैनिक टुकड़ी से जमकर लोहा लिया। मातृभूमि की रक्षा का कर्तव्य निभाते हुए देश के 10 बहादुर जवान वीरगति को प्राप्त हुए। देश के उन वीर सपूतों के बलिदान की स्मृति में 21 अक्टूबर को देश के सभी पुलिस बलों द्वारा शहीद स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है!

अद्वितीय अंजनी

हाथपोखर, बिहार के एक मध्यम वर्गीय परिवार से आए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सहायक कमाण्डेंट श्री अंजनी कुमार की शौर्य गाथा। श्री अंजनी कुमार ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की कोबरा टीम के सहायक कमाण्डेंट के रूप में अतुलनीय वीरता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए नक्सलियों व आतंकियों के खिलाफ अनेक सफल अभियानों को अंजाम दिया, जिसके लिए उन्हें दो बार वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

संसद के प्रहरी

13 दिसम्बर, 2001 देश के संविधान के आधार स्तम्भ संसद भवन को नेस्तनाबूद करने के इरादे से फिदायीनों द्वारा किए गए आत्मघाती हमले को सी.आर.पी.एफ. के अधिकारियों व जवानों ने अतुल्य साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए विफल किया। उन्होंने न केवल सभी आतंकियों को मार गिराया अपितु संसद भवन तथा उसमें मौजूद सांसदों एवं कर्मचारियों पर लेश मात्र भी आंच नहीं आने दी।

बसगोइ, तहसील सासनी, हाथरस, उत्तर प्रदेश के छोटे से परिवार में जन्मे श्री बिरेश चौहान के अन्दर देशप्रेम और देशभक्ति की भावना काफी छोटी उम्र से ही विकसित हो गई थी! युवावस्था में कदम रखने के साथ ही श्री बिरेश ने देशभक्ति के जज्बे को देश की रक्षा के प्रति समर्पित करने का निर्णय लिया तथा सी.आर.पी.एफ. में भर्ती होकर उप निरीक्षक का पद हासिल किया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने आतंकियों और नकसलियों के विरुद्ध कई दुष्कर अभियानों को अंजाम दिया। जगरगुण्डा, जिला सुकमा, छत्तीसगढ़ के समीप पूवर्ती गांव में ऐसे ही एक अभियान को उन्होंने विकटतम परिस्थितियों से जूझते हुए अपनी जान की परवाह किए बिना, अदम्य साहस व उत्कृष्ट वीरता का परिचय देकर सफलतापूर्वक पूर्ण किया। उनकी इस वीरता व साहस के लिए उन्हें राष्ट्रपति के वीरता पदक से सम्मानित किया गया।